सूरह — एक कहानी

सूरह ता-हा

ता हा

पूरा सफ़र — वो रात जब मूसा ने आग देखी —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 20 • 135 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

मा अन्ज़ल्ना 'अलैकल्-क़ुरआन लि-तश्क़ा
2. हमने तुमपर क़ुरआन इस लिए नहीं उतारा कि तुम तकलीफ़ में पड़ो।

इन्ननी अनल्-लाहु ला इलाह इल्ला अना फ़अ्बुद्नी व अक़िमिस्-सलात लि-ज़िक्री
14. बेशक मैं ही अल्लाह हूँ; मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम करो।

क़ाल रब्बिश्-रह ली सद्री; व यस्सिर ली अम्री; वह्लुल 'उक़्दतम्-मिल्-लिसानी; यफ़्क़हू क़ौली
25-28. उसने कहा: मेरे रब, मेरा सीना खोल दे, और मेरा काम आसान कर, और मेरी ज़ुबान की गिरह खोल दे, ताकि वो मेरी बात समझें।

ला तख़ाफ़ा इन्ननी म'अकुमा अस्म'उ व अरा
46. मत डरो; बेशक मैं तुम दोनों के साथ हूँ, मैं सुनता और देखता हूँ।

व क़ुर्-रब्बि ज़िद्नी 'इल्मा
114. और कहो: मेरे रब, मुझे इल्म में बढ़ा दे।

वअ्मुर अह्लक बिस्-सलाति वस्तबिर 'अलैहा
132. और अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद उस पर साबित-क़दम रहो।

तुम्हें तकलीफ़ में डालने के लिए नहीं उतारा

बेटा, ये सूरह दो हर्फ़ों से और फिर महज़ नर्मी के एक जुमले से खुलती है — और इसे समझने के लिए आपको जानना होगा कि जब ये उतरी तो मक्का में क्या हो रहा था।

नबी ﷺ रात को इतनी लंबी नमाज़ पढ़ते थे कि उनके पाँव सूझ जाते। वो एक पूरे शहर के इनकार का ग़म उठाए हुए थे। वो अपने आप को इबादत और फ़िक्र में घिसा रहे थे।

और अल्लाह ने नाज़िल किया: **'ता-हा। मा अन्ज़ल्ना 'अलैकल्-क़ुरआन लि-**

तश्क़ा — **हमने तुमपर क़ुरआन इस लिए नहीं उतारा कि तुम तकलीफ़ में पड़ो** — **इल्ला तज़्किरतल्-लि-मंय्यख़्शा** — बल्कि सिर्फ़ एक **नसीहत** के तौर पर उन के लिए जो डरते हैं।'

बेटा, महसूस कीजिए ये आयत क्या कह रही है। **अल्लाह अपने सब से महबूब बंदे को कह रहे हैं: मैंने ये किताब तुम्हें तोड़ने के लिए नहीं उतारी।**

ये दीन ज़िंदगी को मुसीबत बनाने के लिए नाज़िल नहीं हुआ। ये तुम्हें घिसाने, तुम्हें गुनाह के एहसास से भरने, या तुम्हें एक ना-मुमकिन बोझ के नीचे कुचलने के लिए नहीं भेजा गया।

बेटा, ये ठहर कर सोचने लायक़ है, क्योंकि बहुत से मुख़्लिस लोग दीन को ठीक इसी तरह ग़लत समझते हैं। वो समझते हैं कि वो जितने बे-लुत्फ़ और सख़्त हो जाएँ, उतने ही दीनदार हैं। **और इस सूरह की बिल्कुल पहली लाइन कुछ और कहती है।**

'**तन्ज़ीलम्-मिम्मन ख़लक़ल्-अर्ज़ वस्-समावातिल्-'उला** — एक नुज़ूल उस ज़ात की तरफ़ से जिसने ज़मीन और ऊँचे आसमान बनाए — **अर्-रहमानु 'अलल्-'अर्शिस्-तवा** — **अर्-रहमान (सब से ज़्यादा रहम वाला)**, अर्श पर मुस्तवी हुआ।'

बेटा, ग़ौर कीजिए यहाँ अल्लाह का कौनसा नाम इस्तेमाल हुआ: **अर्-रहमान**, सब से ज़्यादा रहम करने वाला। और अर्श के बारे में ये आयत हम वैसे ही मानते हैं जैसे उसने बयान की, बिना 'कैसे' पूछे और बिना उसे अपनी मख़्लूक़ से तश्बीह दिए — जो सलफ़ का तरीक़ा है, और हर मोमिन के लिए सब से महफ़ूज़।

'**लहू मा फ़िस्-समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ि व मा बैनहुमा व मा तह्तस्-सरा** — उसी का है जो आसमानों में और ज़मीन में और उन के दरमियान और **जो मिट्टी के नीचे** है।'

'**व इन तज्हर बिल्-क़ौलि फ़-इन्नहू यअ्लमुस्-सिर्र व अख़्फ़ा** — और अगर तुम आवाज़ ऊँची करो — तो बेशक, **वो राज़ और उस से भी ज़्यादा छुपी चीज़ को जानता है।**'

बेटा, 'अस्-सिर्र व अख़्फ़ा' — राज़, और जो राज़ से **ज़्यादा** छुपा हो। राज़ वो है जो तुम

किसी को नहीं बताते। और उस से ज़्यादा छुपा वो है जो **तुमने अभी ख़ुद को भी तस्लीम नहीं किया।** वो उसे भी जानता है।

'**अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव लहुल्-अस्माउल्-हुस्ना** — अल्लाह — उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी के **सब से ख़ूबसूरत नाम** हैं।'

क्या मूसा की कहानी तुम तक पहुँची?

और फिर, बेटा, सूरह एक कहानी शुरू करती है — और ये पूरे क़ुरआन में मूसा (अलैहि0) का सब से लंबा वाहिद बयान है, एक ऐसे नबी ﷺ को तसल्ली देने को सुनाई गई जो अपने ख़ुद के फ़िरऔन का सामना कर रहे थे।

'**व हल अताक हदीसु मूसा — और क्या मूसा की कहानी तुम तक पहुँची?**'

'**इज़ र-आ नारन फ़-क़ाल लि-अह्लिहिम्-कुसू इन्नी आनस्तु नारल्-ल'अल्ली आतीकुम मिन्हा बि-क़बसिन औ अजिदु 'अलन्-नारि हुदा** — जब उसने **एक आग देखी** और अपने घरवालों से कहा: यहाँ ठहरो; मैंने एक आग देखी है; शायद मैं तुम्हारे लिए उस से एक **जलता अंगारा** लाऊँ, या आग के पास कोई **राह** पाऊँ।'

बेटा, इस मंज़र का ईमानदारी से तसव्वुर कीजिए। ये सहरा में एक ठंडी रात है। मूसा अपनी बीवी के साथ सफ़र में हैं, और वो उम्मीद से हैं। वो रास्ता भटक गए हैं, और उसके पास न रौशनी है न आग। वो एक दूर का शो'ला देखता है और एक जलती लकड़ी की उम्मीद में उस की तरफ़ जाता है।

वो एक अंगारा ढूँढने गया। वो एक नबी बन कर लौट आया।

बेटा, इसे याद रखिए जब भी आप किसी छोटी चीज़ के लिए निकलें। उसने जलावन (जलती लकड़ी) माँगी और अल्लाह ने उसे नुबुव्वत, एक क़ौम, और जहानों के रब से गुफ़्तगू दी।

'**फ़-लम्मा अताहा नूदिय या मूसा** — और जब वो उस तक आया, उसे **पुकारा गया: ऐ मूसा! इन्नी अना रब्बुक फ़ख़्ल'अ न'अ्लैक — बेशक, मैं तेरा रब हूँ**, तो **अपनी जूतियाँ उतार — इन्नक बिल्-वादिल्-मुक़द्दसि तुवा** — बेशक, तू **मुक़द्दस वादी तुवा**

में है।'

बेटा, एक आदमी का तसव्वुर कीजिए जो रात को अकेला पहाड़ की ढलान पर है, अपना नाम जहानों के रब की तरफ़ से पुकारा जाता सुनता है।

'**व अनख़्तर्तुक फ़स्तमि' लिमा यूहा** — **और मैंने तुझे चुन लिया**, तो **सुन** जो वही की जाती है।'

और फिर पहला पैग़ाम, बेटा, हर चीज़ की बुनियाद:

'**इन्ननी अनल्-लाहु ला इलाह इल्ला अना फ़अ्बुद्नी — बेशक, मैं ही अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी इबादत कर — व अक़िमिस्-सलात लि-ज़िक्री — और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर।**'

बेटा, देखिए मूसा को एक नबी के तौर पर दी गई पहली हिदायत: मेरी इबादत करो, और नमाज़ क़ायम करो। **किसी क़ानून से पहले, किसी मिशन से पहले, फ़िरऔन का ज़िक्र तक आने से पहले — नमाज़।**

और दी गई वजह ग़ौर कीजिए: 'लि-ज़िक्री' — **मेरी याद के लिए**। नमाज़ इसी लिए है। ये वो वक़्त है जो तुम्हें दिन के एक हिस्से से दूसरे हिस्से के दरमियान उसे भूलने से रोकता है।

'**इन्नस्-सा'अत आतियतुन अकादु उख़्फ़ीहा लि-तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा तस्'आ** — बेशक, क़ियामत **आ रही है**; **मैं उसे तक़रीबन छुपाए रखता हूँ**, ताकि हर जान को उस की कोशिश का बदला मिले।'

बेटा, वक़्त जान-बूझ कर छुपाया गया — क्योंकि जो शख़्स तारीख़ जानता वो अपनी तौबह उसे से एक हफ़्ता पहले तक टालता रहता।

ये तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है?

और अब, बेटा, क़ुरआन की सब से ख़ूबसूरत गुफ़्तगुओं में से एक — और ये हमें सिखाती है कि अल्लाह अपने बंदों के साथ कैसे पेश आते हैं।

'**व मा तिल्क बि-यमीनिक या मूसा — और ये तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है, ऐ मूसा?**'

बेटा, अल्लाह जानते हैं ये क्या है। तो फिर क्यों पूछा? उलमा ने कहा: **उसका दिल क़ायम करने के लिए, उसे गुफ़्तगू में खींचने के लिए, और उसे नर्मी से उस हैरत-अंगेज़ चीज़ के लिए तैयार करने के लिए जो उस मामूली चीज़ के साथ होने वाली है।**

और देखिए मूसा कैसे जवाब देता है — और कितना कहता है: '**क़ाल हिय 'असाय — उसने कहा: ये मेरी लाठी है — अतवक्क-उ 'अलैहा — मैं इस पर टेक लगाता हूँ — व अहुश्शु बिहा 'अला ग़नमी — और मैं इस से अपनी भेड़ों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ — व लिय फ़ीहा म-आरिबु उख़्रा — और मेरे लिए इस में और भी काम हैं।**'

बेटा, उस से एक-लफ़्ज़ी सवाल पूछा गया और उसने एक पूरा पैरा दे दिया। मुफ़स्सिरीन इस पर मुस्कुराए: **एक आदमी जिसे एहसास होता है कि वो किसके साथ बात कर रहा है वो नहीं चाहता कि गुफ़्तगू ख़त्म हो।** वो अपनी बारी लंबी खींच रहा है।

'**क़ाल अल्क़िहा या मूसा — उसने कहा: इसे डाल दे, ऐ मूसा। फ़-अल्क़ाहा फ़-इज़ा हिय हय्यतुन तस्'आ** — तो उसने इसे डाल दिया, **और वो एक साँप बन गया, तेज़ी से चलता हुआ।**'

'**क़ाल ख़ुज़्हा व ला तख़फ़ स-नु'ईदुहा सीरतहल्-ऊला** — उसने कहा: **इसे पकड़ और मत डर; हम इसे इसकी पहली हालत में लौटा देंगे।**'

बेटा, उस लाठी से कुछ सीखिए। **ये एक चरवाहे की सब से मामूली चीज़ थी।** उसने बरसों बिना सोचे इस पर टेक लगाई थी। और अल्लाह के हाथ में ये वो आला बन गया जिसने एक समंदर चीरा और एक सल्तनत का जादू निगल लिया।

तो जो तुम्हारे हाथ में है उसे हक़ीर मत समझो, बेटा। **तुम्हारा मामूली हुनर, तुम्हारी मामूली नौकरी, तुम्हारी मामूली आवाज़ — अगर अल्लाह उस में अपनी बरकत डाल दें, तो ये वो करती है जो किसी ने उम्मीद न की थी।**

और फिर उसका हाथ: '**वज़्मुम यदक इला जनाहिक तख़्रुज बैज़ा-अ मिन ग़ैरि सू** —

और अपना हाथ अपनी बग़ल की तरफ़ मिला; वो बिना किसी बीमारी के **सफ़ेद** निकलेगा — **आयतन उख़्रा** — एक दूसरी निशानी के तौर पर — **लि-नुरियक मिन आयातिनल्-कुब्रा** — ताकि हम तुम्हें अपनी **बड़ी निशानियों** में से दिखाएँ।'

'इज़्-हब इला फ़िर्'औन इन्नहू तग़ा — फ़िरऔन के पास जाओ। बेशक, उसने हद से तजावुज़ किया है।'

मेरे रब, मेरा सीना खोल दे

और अब, बेटा, वो दुआ जिसे हर तालिब-ए-इल्म, हर मुक़र्रिर, हर उस्ताद, हर उस शख़्स को जो किसी मुश्किल चीज़ का सामना कर रहा हो आज रात याद कर लेनी चाहिए:

'क़ाल रब्बिश्-रह ली सद्री — उसने कहा: मेरे रब, मेरा सीना खोल दे — व यस्सिर ली अम्री — और मेरा काम आसान कर — वह्लुल 'उक़्दतम्-मिल्-लिसानी — और मेरी ज़ुबान की गिरह खोल दे — यफ़्क़हू क़ौली — ताकि वो मेरी बात समझें।'

बेटा, इन चार दरख़्वास्तों की **तरतीब** देखिए, क्योंकि ये कामिल है और ये जान-बूझ कर है।

पहले — 'इश्रह ली सद्री', मेरा **सीना** खोल दे। किसी बाहरी चीज़ से पहले, वो अंदरूनी गुंजाइश माँगता है: हिम्मत, सुकून, अपने अंदर इतनी जगह कि जो आ रहा है उसे थाम सके। बेटा, **एक तंग सीना घबराता है; एक खुला सीना मुश्किल को बिना टूटे थाम लेता है।**

दूसरे — 'यस्सिर ली अम्री', मेरा काम **आसान** कर। हटा नहीं। **वो फ़िरऔन के पास जाने से माफ़ी नहीं माँगता। वो माँगता है कि रास्ता हमवार कर दिया जाए।**

तीसरे — 'वह्लुल 'उक़्दतम्-मिल्-लिसानी', मेरी ज़ुबान की **गिरह** खोल दे। उसकी ज़ुबान में एक मुश्किल थी, और उसने उसे ढीली करने को माँगा।

चौथे — और यही वो है जिसे लोग चूक जाते हैं, बेटा — **'यफ़्क़हू क़ौली', ताकि वो मेरी बात समझें।**

बेटा, ग़ौर कीजिए: **उसने फ़साहत ख़ुद उस के लिए नहीं माँगी। उसने माँगा कि उसकी बात समझी जाए।** बोलने का मक़्सद पुर-असर लगना नहीं; ये है कि सुनने वाले समझें।

और फिर उसने कुछ और माँगा, बेटा — और अल्लाह ने उसे हमेशा के लिए महफ़ूज़ किया: '**वज्'अल ली वज़ीरम्-मिन अह्ली — और मेरे लिए मेरे घरवालों में से एक मददगार मुक़र्रर कर — हारून अख़ी — हारून, मेरे भाई को — उश्दुद बिही अज़्री — उस के ज़रिए मेरी ताक़त बढ़ा — व अश्रिक्हु फ़ी अम्री — और उसे मेरे काम में शामिल कर।**'

बेटा, इसे देखिए। एक नबी, मुंतख़ब और सीधा मुख़ातिब, एक शरीक माँगता है। **उसने अपने बग़ल में किसी की ज़रूरत को कमज़ोरी नहीं समझा।**

और क्यों? '**कै नुसब्बिहक कसीरंव्-व नज़्कुरक कसीरा — ताकि हम तेरी कसरत से तस्बीह करें और तुझे कसरत से याद करें।**' बेटा, उसकी एक साथी की दरख़्वास्त तक इबादत से जायज़ ठहराई गई, उसकी अपनी सहूलत से नहीं।

'**क़ाल क़द ऊतीत सुअ्लक या मूसा — उसने कहा: तुझे तेरी दरख़्वास्त दे दी गई, ऐ मूसा।**'

बेटा, चार दरख़्वास्तें और एक शरीक — सब एक जुमले में अता।

और फिर अल्लाह उसे उसके बचपन के एहसान याद दिलाते हैं — टोकरी, दरिया, माँ के पास वापसी — '**व ला तह्ज़न** — ताकि वो ग़म न करे' — और फिर एक जुमला जो किसी इंसान को दिए गए सब से बुलंद ए'ज़ाज़ों में से एक है:

'**वस्तन'अ्तुक लि-नफ़्सी — और मैंने तुझे अपने लिए बनाया।**'

बेटा, 'इस्तन'अ्तुक' — मैंने तुझे बनाया, तराशा, तर्बियत दी, **अपने लिए**। उसकी ज़िंदगी की हर मुश्किल — दरिया, महल, सहरा में भागना, बरसों भेड़ चराना — ये सब इस ज़िम्मेदारी के लिए तैयारी थी, हाथ से।

बेटा, अपनी ज़िंदगी के बारे में ये याद रखिए। **अजीब मोड़, ज़ाया लगते हुए साल, वो नौकरियाँ जो कहीं न ले गईं — अल्लाह शायद कुछ बना रहे हों।**

उस से नर्मी से बात करो

'इज़्-हबा इला फ़िर्'औन इन्नहू तग़ा — तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ। बेशक, उसने हद से तजावुज़ किया है।'

और फिर, बेटा, इस पूरी कहानी में सब से हैरत-अंगेज़ हिदायत:

'फ़-क़ूला लहू क़ौलल्-लय्यिनल्-ल'अल्लहू यतज़क्करू औ यख़्शा — और उस से नर्म बात करो, ताकि शायद वो नसीहत पकड़े या (अल्लाह से) डरे।'

बेटा, इसे फिर पढ़िए। **ये फ़िरऔन है।** वो आदमी जिसने ख़ुदाई का दावा किया। वो आदमी जिसने बच्चे ज़िबह किए और एक क़ौम को ग़ुलाम बनाया। अगर ज़मीन पर किसी इंसान को कभी सख़्ती से बात किए जाने का हक़ था, तो वो यही था।

और अल्लाह का हुक्म है: 'क़ौलल्-लय्यिनन' — एक **नर्म, मुलायम बात।**

बेटा, ये एक आयत ही हमारे दीन के बारे में बात करने का अंदाज़ बदल देना चाहिए। **अगर फ़िरऔन से नर्मी से मुख़ातिब होना था, तो फिर आख़िर हम किस के साथ सख़्ती करने के हक़दार हैं?** वो रिश्तेदार जो नमाज़ नहीं पढ़ता? वो साथी जो मज़ाक़ उड़ाता? वो नौजवान जिसके पास सवाल हैं?

और वजह ग़ौर कीजिए: 'ल'अल्लहू यतज़क्करू औ यख़्शा' — **शायद** वो नसीहत पकड़े। नर्मी महज़ अच्छे अख़्लाक़ नहीं; **ये हिकमत-ए-अमली है।** सख़्ती एक शख़्स को अपना मुक़ाम बचाने पर मजबूर करती है; नर्मी उसे अपना मुक़ाम बिना ज़लील हुए बदलने की गुंजाइश देती है।

और बेटा, एक और चीज़ ग़ौर कीजिए जो उलमा ने बताई: लफ़्ज़ 'ल'अल्ल' — शायद। अल्लाह, जो जानते थे कि फ़िरऔन कभी ईमान न लाएगा, फिर भी इसे 'शायद' के तौर पर बयान किया। **तो कभी किसी को ना-उम्मीद मत करो। तुम्हारे पास वो इल्म नहीं जो तुम्हें इसका हक़ दे।**

और फिर, बेटा, दोनों भाइयों ने अपना ख़ौफ़ ज़ाहिर किया: '**क़ाला रब्बना इन्नना नख़ाफ़ु अंय्यफ़्रुत 'अलैना औ अंय्यत्ग़ा** — हमारे रब, हमें डर है कि वो हम पर **जल्दी** करेगा या **हद से बढ़ेगा।**'

और अल्लाह ने वो जुमला कह कर जवाब दिया जिसने तब से मोमिनीन को सँभाला हुआ है:

'क़ाल ला तख़ाफ़ा — उसने कहा: मत डरो — इन्ननी म'अकुमा अस्म'उ व अरा — बेशक, मैं तुम दोनों के साथ हूँ; मैं सुनता और देखता हूँ।'

बेटा, इसे याद कर लीजिए। 'इन्ननी म'अकुमा अस्म'उ व अरा।'

उसने ये नहीं कहा 'मैं तुम्हारी हिफ़ाज़त करूँगा' या 'तुम्हें कुछ न होगा'। उसने कुछ बेहतर कहा: मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं सुनता हूँ। मैं देखता हूँ।

बेटा, एक डरे हुए शख़्स को अस्ल में यही चाहिए — नतायज की ज़मानत नहीं, बल्कि ये यक़ीन कि वो कमरे में अकेला नहीं, कि उन से कहा गया हर लफ़्ज़ सुना जाता है और उन के साथ किया गया हर अमल देखा जाता है।

इसे अपने आप से कहिए उस मीटिंग से पहले जिस से आप डर रहे हैं, उस मुश्किल गुफ़्तगू से पहले, किसी ऐसी जगह में दाख़िल होने से पहले जहाँ आप ख़ुद को छोटा महसूस करते हैं।

जादूगर, और समंदर

वो फ़िरऔन के पास गए और पैग़ाम पहुँचाया, और उसने हर मुतकब्बिर हुक्मरान के दो सवालों से जवाब दिया: हमारे बाप-दादा का क्या? और ये तुम्हारा रब आख़िर कौन है?

जादूगर फिर ईद के दिन एक खुले मुक़ाबले के लिए जमा किए गए। और बेटा, मुक़ाबला शुरू होने से पहले, मूसा ने उन्हें एक तंबीह दी जो ख़ुद एक सबक़ है: **'वैलकुम ला तफ़्तरू 'अलल्-लाहि कज़िबन फ़-युस्हितकुम बि-'अज़ाब — तुम पर अफ़सोस! अल्लाह पर झूठ मत घढ़ो**, वरना वो तुम्हें एक अज़ाब से मिटा देगा।'

'फ़-तनाज़'ऊ अम्रहुम बैनहुम व असर्रून्-नज्वा — और उन्होंने अपने मामले में **आपस में इख़्तिलाफ़** किया और **चुपके से मशवरा** किया।'

बेटा, उन ख़ामोश अल्फ़ाज़ ने उन पर असर किया। **मो'जिज़े से पहले ही, उन में से**

कुछ सोचने लगे कि ये आदमी किसी जादूगर के सिवा कुछ और है।

उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डालीं, और उनके जादू से मूसा को लगा कि वो चल रही हैं। '**फ़-औजस फ़ी नफ़्सिही ख़ीफ़तम्-मूसा — तो मूसा ने अपने अंदर एक ख़ौफ़ महसूस किया।**'

बेटा, ग़ौर कीजिए कि **एक नबी तक ने ख़ौफ़ महसूस किया।** और अल्लाह ने कहा: '**क़ुल्ना ला तख़फ़ इन्नक अन्तल्-अअ्ला — हमने कहा: मत डर; बेशक, तू ही ग़ालिब है।**'

'**व अल्क़ि मा फ़ी यमीनिक तल्क़फ़ मा सन'ऊ** — और जो तेरे दाहिने हाथ में है उसे डाल; **वो उस सब को निगल जाएगा जो उन्होंने बनाया — इन्नमा सन'ऊ कैदु साहिर** — जो उन्होंने बनाया वो बस एक जादूगर की चाल है — **व ला युफ़्लिहुस्-साहिरु हैसु अता** — और जादूगर कामयाब नहीं होता जहाँ भी जाए।'

'**फ़-उल्क़ियस्-सहरतु सुज्जदा — तो जादूगर सजदे में गिरा दिए गए — क़ालू आमन्ना बि-रब्बि हारून व मूसा** — उन्होंने कहा: **हम हारून और मूसा के रब पर ईमान लाए।**'

बेटा, वो **गिरे** — आयत ये नहीं कहती कि वो झुके या रुकू किया; ये कहती है कि वो **गिरा दिए गए**, गोया हक़ ने उन्हें पाँव से उखाड़ दिया।

फ़िरऔन आग-बगूला हुआ और धमकी दी कि उनके हाथ-पाँव मुख़ालिफ़ तरफ़ से काट कर खजूर के तनों पर सूली देगा। और उनका जवाब, बेटा, क़ुरआन के अज़ीम ईमानी एलानों में से एक है:

'**लन्-नुअ्सिरक 'अला मा जाअना मिनल्-बय्यिनात — हम कभी तुझे उस पर तरजीह न देंगे जो वाज़ेह दलाइल हमारे पास आ चुके — फ़क़्ज़ि मा अन्त क़ाज़ — तो जो तू फ़ैसला करना चाहता है कर ले — इन्नमा तक़्ज़ी हाज़िहिल्-हयातद्-दुन्या — तू सिर्फ़ इस दुनियावी ज़िंदगी का फ़ैसला कर सकता है।**'

बेटा, 'इन्नमा तक़्ज़ी हाज़िहिल्-हयातद्-दुन्या' — **तेरा इख़्तियार इस ज़िंदगी के किनारे पर ख़त्म हो जाता है।** यही वो जुमला है जो एक मोमिन को किसी भी

ज़ालिम से बे-ख़ौफ़ बना देता है।

और उन्होंने दुआ की: '**रब्बना अफ़्रिग़ 'अलैना सब्रंव्-व तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन** — हमारे रब, हम पर **सब्र उंडेल दे** और हमें मुसलमान हो कर मौत दे।' बेटा, 'अफ़्रिग़' — हम पर **उंडेल** दे, जैसे सर पर पानी उंडेला जाता है। उन्होंने माँगा कि सब्र में भिगो दिए जाएँ।

फिर बचाव आया। अल्लाह ने मूसा को हुक्म दिया कि रात को सफ़र करे और समंदर में एक सूखा रास्ता मारे। फ़िरऔन पीछे पड़ा — और समंदर उस पर बंद हो गया। और सूरह उसके आख़िरी लम्हात दर्ज करती है, बेटा, और उन में सबक़ सख़्त है: डूबने के वक़्त उसने ईमान का एलान किया, और बहुत देर हो चुकी थी; उसका जिस्म बाद वालों के लिए एक निशानी के तौर पर महफ़ूज़ कर दिया गया।

बछड़ा, और सामरी की आवाज़

और अब, बेटा, कहानी का एक मुश्किल हिस्सा — और एक ऐसा जिस से हर जमाअत को सीखना चाहिए।

मूसा अपनी क़ौम को तीस रातों के लिए छोड़ गए, जो चालीस तक पूरी कीं, हारून को इंचार्ज छोड़ कर। और अल्लाह ने उनसे कहा: '**फ़-इन्ना क़द फ़तन्ना क़ौमक मिम्-ब'अ्दिक व अज़ल्लहुमुस्-सामिरिय्य — हमने तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारी क़ौम को आज़माया, और सामरी ने उन्हें गुमराह कर दिया।**'

'**फ़-रज'अ मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बान असिफ़ा** — तो मूसा अपनी क़ौम की तरफ़ **ग़ुस्से** और **ग़म** में **लौटा।**'

सामरी ने उनके पिघले ज़ेवरात से एक बछड़ा बनाया था जो एक आवाज़ निकालता — '**जसदल्-लहू ख़ुवार**', एक जिस्म जिसे गाय की तरह आवाज़ आती थी — और कहा: ये तुम्हारा ख़ुदा है और मूसा का ख़ुदा, मगर वो भूल गया।

बेटा, ग़ौर कीजिए कि एक क़ौम जिसने **समंदर को फटते देखा** था कितनी जल्दी एक धातु के बछड़े की तरफ़ मुड़ गई। बस कुछ हफ़्ते हुए थे।

और हारून (अलैहि0) ने उन्हें ख़बरदार किया था: '**या क़ौमि इन्नमा फ़ुतिन्तुम बिह** — ऐ मेरी क़ौम, तुम्हें इस से सिर्फ़ **आज़माया** जा रहा है — **व इन्न रब्बकुमुर्-रहमानु फ़त्तबि'ऊनी व अती'ऊ अम्री** — और बेशक तुम्हारा रब **अर्-रहमान** है, तो मेरी पैरवी करो और मेरा हुक्म मानो।' और उन्होंने कहा: हम इस पर जमे रहेंगे जब तक मूसा लौट न आए।

मूसा ने अपने दुख में अपने भाई को सर और दाढ़ी से पकड़ लिया, और हारून ने कहा: '**यब्नअुम्म ला तअ्ख़ुज़ बि-लिह्यती व ला बि-रअ्सी** — **ऐ मेरी माँ के बेटे**, मुझे मेरी दाढ़ी या सर से मत पकड़ — **इन्नी ख़शीतु अन तक़ूल फ़र्रक़्त बैन बनी इस्राईल व लम तर्क़ुब क़ौली** — **मुझे डर था कि तू कहेगा: तूने बनी इस्राईल में फूट डाल दी और मेरी बात का ख़याल न रखा।**'

बेटा, दो चीज़ें ग़ौर कीजिए। पहले, हारून ने उसे 'मेरी **माँ** के बेटे' कह कर मुख़ातिब किया — उन के दरमियान के सब से नर्म रिश्ते की तरफ़ इशारा करते हुए, अपने भाई का ग़ुस्सा ठंडा करने को। बेटा, **ख़ानदानी झगड़े में, उस चीज़ की तरफ़ हाथ बढ़ाओ जो नर्म करती है, उस की तरफ़ नहीं जो जीतती है।**

दूसरे, उसकी मुश्किल ग़ौर कीजिए। वो डरा था कि सख़्ती से अमल करना जमाअत को **फाड़** देगा। बेटा, ये हर उस शख़्स के लिए अस्ली और मुस्तक़िल मुश्किल है जो क़ियादत में हो: इत्तेहाद की ख़ातिर कितना बर्दाश्त करें, और हद कहाँ है।

और सामरी का बहाना, बेटा, हर उस शख़्स का बहाना है जो दीन में अपनी घढ़त की पैरवी करता है: '**फ़-क़बज़्तु क़ब्ज़तम्-मिन असरिर्-रसूलि फ़-नबज़्तुहा व कज़ालिक सव्वलत ली नफ़्सी** — **...और यूँ मेरे नफ़्स ने मुझे फ़रेब दिया।**'

बेटा, 'सव्वलत ली नफ़्सी' — मेरे अपने नफ़्स ने इसे मेरे लिए ख़ूबसूरत बना दिया। **यही हर बिद'अत और हर ख़ुद-जायज़ ठहराए गुनाह का सरचश्मा है: दलील नहीं, बल्कि नफ़्स किसी चीज़ को सजाना जब तक वो अच्छी न लगने लगे।**

और मूसा का बछड़े पर फ़ैसला: '**वन्ज़ुर इला इलाहिकल्-लज़ी ज़ल्त 'अलैहि 'आकिफ़ा** — अपने उस **ख़ुदा** को देख जिसपर तू जमा रहा — **ल-नुहर्रिक़न्नहू सुम्म ल-नन्सिफ़न्नहू फ़िल्-यम्मि नस्फ़ा** — हम इसे ज़रूर **जलाएँगे** और फिर उसे

समंदर में अच्छी तरह **बिखेर** देंगे।'

और फिर उसने हक़ सादा तौर पर फिर बयान किया: '**इन्नमा इलाहुकुमुल्-लाहुल्-लज़ी ला इलाह इल्ला हुव वसि'अ कुल्ल शै-इन 'इल्मा** — तुम्हारा माबूद तो बस अल्लाह है, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। **उसने हर चीज़ को इल्म में घेर रखा है।**'

चेहरे ज़िंदा के सामने झुके हुए

फिर सूरह क़ियामत के दिन की तरफ़ मुड़ती है, बेटा, बड़े ज़ोर वाली तस्वीरों के साथ।

'**यौम-इज़िंय्यत्तबि'ऊनद्-दा'इय ला 'इवज लह** — उस दिन, सब **पुकारने वाले के पीछे** चलेंगे, उस से कोई कज-रवी नहीं — **व ख़श'अतिल्-अस्वातु लिर्-रहमानि फ़-ला तस्म'उ इल्ला हम्सा — और सारी आवाज़ें अर्-रहमान के सामने झुक जाएँगी, तो तुम सिर्फ़ एक हल्की सरसराहट सुनोगे।**'

बेटा, उस ख़ामोशी का तसव्वुर कीजिए। अरबों लोग जमा — और सब से ऊँची आवाज़ एक सरसराहट, या पाँव की आहट।

'**यौम-इज़िल्-ला तन्फ़'उश्-शफ़ा'अतु इल्ला मन अज़िन लहुर्-रहमानु व रज़िय लहू क़ौला** — उस दिन, कोई शफ़ाअत फ़ायदा न देगी सिवाए उस के जिसे अर्-रहमान **इजाज़त** दे और जिसकी बात से वो **राज़ी** हो।'

'**यअ्लमु मा बैन ऐदीहिम व मा ख़ल्फ़हुम व ला युहीतून बिही 'इल्मा** — वो जानता है जो उनके आगे है और जो उनके पीछे है, मगर वो उसे इल्म में घेर नहीं सकते।'

'**व 'अनतिल्-वुजूहु लिल्-हय्यिल्-क़य्यूम — और सारे चेहरे अल-हय्य, अल-क़य्यूम के सामने झुक जाएँगे — व क़द ख़ाब मन हमल ज़ुल्मा** — और वो नाकाम हुआ जो **ज़ुल्म** उठाए हुए है।'

बेटा, "अनत' — नीची झुकी, सुपुर्द, जिस तरह एक क़ैदी का चेहरा झुकता है। **हर चेहरा — मुतकब्बिर, मशहूर, वो जिन्हें कोई सीधा देख न सकता था — सब अल-**

हय्य, अल-क़य्यूम के सामने झुके।

'**व मंय्यअ्मल मिनस्-सालिहाति व हुव मुअ्मिनुन फ़-ला यख़ाफ़ु ज़ुल्मंव्-व ला हज़्मा** — और जो नेक अमल करे जब कि वो मोमिन हो **न ज़ुल्म से डरेगा न हक़-तल्फ़ी से।**'

मेरे रब, मुझे इल्म में बढ़ा दे

और फिर, बेटा, नबी ﷺ को वही क़ुबूल करने के बारे में एक हिदायत आती है — और उस के अंदर, क़ुरआन की सब से अहम दुआओं में से एक।

'**व ला तअ्जल बिल्-क़ुरआनि मिन क़ब्लि अंय्युक़्ज़ा इलैक वह्युह — और क़ुरआन में जल्दी मत कर उस से पहले कि इसकी वही तुझ तक पूरी हो — व क़ुर्-रब्बि ज़िद्नी 'इल्मा — और कहो: मेरे रब, मुझे इल्म में बढ़ा दे।**'

बेटा, जोड़ा गया जोड़ा देखिए। **जल्दी मत करो — और ज़्यादा इल्म माँगो।** सीखने में सब्र, और उसकी भूक, एक ही आयत में।

'रब्बि ज़िद्नी 'इल्मा' — **मेरे रब, मुझे इल्म में बढ़ा दे।** बेटा, ये पूरे क़ुरआन में वाहिद चीज़ है जो अल्लाह अपने रसूल ﷺ को **ज़्यादा** माँगने का हुक्म देते हैं। ज़्यादा दौलत नहीं, ज़्यादा ताक़त नहीं, ज़्यादा पैरोकार नहीं। **ज़्यादा इल्म।**

इसे एक किताब खोलने से पहले कहिए। इसे एक सबक़ से पहले कहिए। इसे तब कहिए जब आप क़ुरआन पढ़ने बैठें।

और फिर, बेटा, सूरह आदम (अलैहि0) की कहानी सुनाती है — और ये इंसानी फ़ितरत के बारे में कुछ समझाती है जो आपको अपने बारे में जानना चाहिए:

'**व लक़द 'अहिद्ना इला आदम मिन क़ब्लु फ़-नसिय व लम नजिद लहू 'अज़्मा** — और हमने आदम से पहले अह्द लिया था, **मगर वो भूल गया, और हमने उस में इरादे का पुख़्तापन न पाया।**'

बेटा, 'फ़-नसिय' — वो **भूल** गया। भूल-पन हम में रखा गया है; ख़ुद लफ़्ज़ 'इंसान' को बहुत से उलमा 'निस्यान', भूलना, से जोड़ते हैं।

इब्लीस ने उसे वस्वसा दिया, उस मम्नू' दरख़्त को 'हमेशगी और उस मिल्कियत का दरख़्त जो कभी ख़राब न होगी' कह कर — बेटा, इस बिक्री की बात ग़ौर कीजिए: **हमेशगी और मिल्कियतें, वो दो चीज़ें जिनके पीछे इंसान आज भी सब से ज़्यादा भागता है।**

'**व 'असा आदमु रब्बहू फ़-ग़वा** — और आदम ने अपने रब की ना-फ़रमानी की और भटका — **सुम्मज्-तबाहु रब्बुहू फ़-ताब 'अलैहि व हदा** — **फिर उसके रब ने उसे चुना, और उस की तौबह क़ुबूल की, और हिदायत दी।**'

बेटा, उस तरतीब को देखिए और उस से दिल को तक़वियत लीजिए: वो फिसला, और फिर वो **चुना** गया, बख़्शा गया, और हिदायत दिया गया। **फिसलना रिश्ता ख़त्म न कर सका।**

और फिर दो रास्ते बयान किए जाते हैं: '**फ़-मनित्-तब'अ हुदाय फ़-ला यज़िल्लु व ला यश्क़ा** — जो **मेरी हिदायत की पैरवी करे वो न भटकेगा न बद-बख़्त होगा।**'

'**व मन अअ्रज़ 'अन ज़िक्री फ़-इन्न लहू म'ईशतन ज़ंका** — **और जो मेरी याद से मुँह मोड़े — बेशक, उसके लिए एक तंग ज़िंदगी है** — **व नह्शुरुहू यौमल्-क़ियामति अअ्मा** — और हम उसे क़ियामत के दिन अंधा उठाएँगे।'

बेटा, 'म'ईशतन ज़ंका' — एक **तंग**, दबी, कसी हुई ज़िंदगी। और ग़ौर कीजिए: ये नहीं कहता एक **ग़रीब** ज़िंदगी। एक शख़्स के पास सब कुछ हो सकता और वो उस तंगी के अंदर जी सकता है — सीने की जकड़न, बे-चैनी, जो है उस से लुत्फ़ उठाने की ना-अहली, वो नींद जो आती नहीं।

बेटा, ये मौजूदा दुनिया के बारे में सब से सच्ची आयतों में से एक है। **उसकी याद से मुँह मोड़ना आम तौर पर ग़ुर्बत नहीं पैदा करता। ये एक ऐसी ज़िंदगी पैदा करता है जो भरी हुई और फिर भी बे-हवा है।**

और ग़ौर कीजिए कि ये सूरह कैसे **खुली** थी: 'हमने क़ुरआन तुम्हें तकलीफ़ में डालने के लिए नहीं उतारा' — और यहाँ, तकलीफ़ ठीक वही है जो उस से मुँह मोड़ने से आती है। **किताब बोझ नहीं; उसे छोड़ना बोझ है।**

अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दो

फिर सूरह नबी ﷺ को — और उनके ज़रिए, आपको — कुछ आख़िरी हिदायात देती है, बेटा।

'**फ़स्बिर 'अला मा यक़ूलून — तो जो वो कहते हैं उस पर सब्र करो — व सब्बिह बि-हम्दि रब्बिक क़ब्ल तुलू'इश्-शम्सि व क़ब्ल ग़ुरूबिहा** — और **सूरज निकलने से पहले और उस के डूबने से पहले अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करो — व मिन आना-इल्-लैलि फ़-सब्बिह व अत्राफ़न्-नहारि ल'अल्लक तर्ज़ा** — और रात के कुछ हिस्सों में तस्बीह करो, और दिन के किनारों पर, **ताकि तुम राज़ी हो जाओ।**'

बेटा, दबाव में आए दिल का नुस्ख़ा देखिए: **सब्र, और दिन भर में बिखरा हुआ ज़िक्र।**

और वादा देखिए: 'ल'अल्लक तर्ज़ा' — ताकि **तुम राज़ी** हो जाओ, मुतमइन, ख़ुश। सिर्फ़ ये नहीं कि अल्लाह तुम से राज़ी हों — बल्कि ये कि **तुम** सुकून पाओ। बेटा, यही वो है जो याद एक शख़्स के लिए करती है: **इसे ठहरा देती है।**

'**व ला तमुद्दन्न 'ऐनैक इला मा मत्तअ्ना बिही अज़्वाजम्-मिन्हुम ज़हरतल्-हयातिद्-दुन्या — और अपनी आँखें उस की तरफ़ मत फैलाओ जो हमने उन में से कुछ गिरोहों को दिया — दुनियावी ज़िंदगी की रौनक़ — लि-नफ़्तिनहुम फ़ीह — ताकि हम उन्हें उस में आज़माएँ — व रिज़्क़ु रब्बिक ख़ैरुंव्-व अब्क़ा — और तुम्हारे रब का रिज़्क़ बेहतर और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला है।**'

बेटा, 'ला तमुद्दन्न 'ऐनैक' — अपनी आँखें उस की तरफ़ मत **खींचो**। क्या जुमला है उस अंदाज़ के लिए जिस से हम दूसरों की ज़िंदगियाँ देखते हैं। और उनकी दौलत के लिए चुना गया लफ़्ज़ '**ज़हरह**' है — एक **फूल**: चमकदार, ख़ूबसूरत, और कुछ दिन में ख़त्म।

और फिर, बेटा, वो हिदायत जिसे हर घराना चलाने वाले को सुनना चाहिए:

'**वअ्मुर अह्लक बिस्-सलाति वस्तबिर 'अलैहा — और अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दो, और ख़ुद उस पर साबित-क़दम रहो — ला नस्अलुक रिज़्क़न नह्नु नर्ज़ुक़ुक — हम तुम से रिज़्क़ नहीं माँगते; हम तुम्हें रिज़्क़ देते हैं — वल्-'आक़िबतु**

लित्-तक़्वा — और बेहतरीन अंजाम परहेज़गारी का है।'

बेटा, उस हुक्म के दो हिस्से देखिए। 'अपने घरवालों को नमाज़ का हुक्म दो' — और 'वस्तबिर 'अलैहा', ख़ुद उस पर **साबित-क़दम** और पाबंद रहो। **तुम उस चीज़ का हुक्म नहीं दे सकते जो तुम ख़ुद नहीं कर रहे।** और 'इस्तबिर' का मतलब ये है कि इसे दोहराना पड़ेगा, बरसों तक, बिना छोड़े।

और देखिए अल्लाह इस के साथ क्या जोड़ते हैं: 'हम तुम से रिज़्क़ नहीं माँगते; **हम** तुम्हें रिज़्क़ देते हैं।' बेटा, ये यहाँ क्यों रखा गया? क्योंकि **नमाज़ नज़र-अंदाज़ करने का सब से आम बहाना — तुम्हारा और तुम्हारे घरवालों का — रोज़ी कमाना है।** और अल्लाह कह रहे हैं: रिज़्क़ मेरा शोबा है। उस के लिए नमाज़ क़ुरबान मत करो।

और सूरह की आख़िरी हिदायत: '**क़ुल कुल्लुम्-मुतरब्बिसुन फ़-तरब्बसू** — कहो: **हर एक इंतेज़ार में है, तो इंतेज़ार करो** — **फ़-सतअ्लमून मन अस्हाबुस्-सिरातिस्-सविय्यि व मनिह्-तदा** — **फिर तुम जान लोगे कि कौन सीधे रास्ते पर है और कौन हिदायत-याफ़्ता है।**'

बेटा, तो वो सूरह जो एक ग़मज़दा नबी ﷺ से ये कह कर शुरू हुई 'हमने इसे तुम्हें तकलीफ़ में डालने के लिए नहीं उतारा' ये कह कर ख़त्म होती है कि सब्र करो, नमाज़ पढ़ो, अपने घरवालों की नमाज़ की हिफ़ाज़त करो, दूसरों के फूलों को मत घूरते रहो — और फ़ैसला उस पर छोड़ दो जो देखता है।

यही पूरी ता-हा है, बेटा: एक किताब जो बोझ नहीं, एक रब जो कहता है 'मैं तुम्हारे साथ हूँ; मैं सुनता और देखता हूँ', और एक ज़िंदगी जो नमाज़ से जुड़ी रहती है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. ये दीन तुम्हें तोड़ने के लिए नाज़िल नहीं हुआ — बे-लुत्फ़ी और सख़्ती दीनदारी की निशानी नहीं।

2. वो एक जलती लकड़ी के लिए निकला और एक नबी बन कर लौट आया — किसी छोटे काम को हक़ीर मत समझो जो तुम भलाई के लिए करो।

3. नमाज़ मूसा को दिया गया पहला हुक्म थी, और उसका मक़्सद नाम किया गया: 'लि-ज़िक्री', मेरी याद के लिए।

4. चार-हिस्से वाली दुआ तरतीब से सीखो: मेरा सीना खोल, मेरा काम आसान कर, मेरी ज़ुबान खोल — ताकि वो समझें।

5. फ़िरऔन से नर्म बात करनी थी — तो तुम्हारे मेल-जोल में कोई शख़्स सख़्ती का हक़दार नहीं।

6. ख़ौफ़ का जवाब नतायज की ज़मानत नहीं बल्कि एक मौजूदगी है: 'मैं तुम दोनों के साथ हूँ; मैं सुनता और देखता हूँ।'

7. उसकी याद से मुँह मोड़ना एक तंग ज़िंदगी पैदा करता है, ग़रीब नहीं — और इलाज नमाज़ है, अपनी ज़िंदगी और अपने घरवालों की।

रब्बिश्-रह ली सद्री व यस्सिर ली अम्री, व रब्बि ज़िद्नी 'इल्मा। आमीन।